*सहिष्णुता और आर्थिक प्रगति के प्रति सम्मान**

रघुराम जी. राजन

मुझे इस संस्थान में दीक्षांत समारोह के अवसर पर भाषण देने के लिए पुनः आमंत्रित करने हेतु धन्यवाद। मैंने यहां से 30 वर्ष पहले इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री हासिल की थी। तब मैं इस बात के लिए उत्सुक था कि मेरे भविष्य में क्या होगा, क्योंकि तब मुझे यह एहसास नहीं था कि इस संस्थान में मुझे भविष्य के लिए भी इतनी अच्छी तरह से तैयार कर दिया है। हमारे प्रोफेसर्स - मैं उन्हें कैसे भूल सकता हूँ, मैं उनके नाम नहीं लूंगा - वे समर्पित पेशेवर थे। बहुत सारी बातें पूछते थे, वे यह जानते थे कि इस प्रकार से वे हमें चुनौती दे रहे हैं किंतु, ऐसा करके वे हमें यह अवसर दे रहे थे कि हम वह सब कुछ सीखें जिसकी हमारे भीतर क्षमता है। इसी तरह एक बात यह भी महत्वपूर्ण है कि उन दिनों हमारी इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग कक्षा में, आईआईटी, दिल्ली में कंप्यूटर साइंस इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग का हिस्सा हुआ करती थी - उनमें कुछ लोग बहुत विलक्षण प्रतिभा के थे जिन्हें मुझे जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके साथ सहकर्मी के रूप में कार्य करके, और ग्रेड्स हासिल करने हेतु उनसे स्पर्धा करके मैंने यह सीखा है कि सफल होने के लिए ऐसे प्रचंड वातावरण में क्या-क्या करना पड़ता है, अत्यधिक परिश्रम, मित्रता और भारी भरकम भाग्य। से सबक तब से मेरे साथ हैं।

आईआईटी, दिल्ली में पहले भी न केवल अध्ययन हुआ करता था बल्कि इसका संबंध बढ़ने से था। मुझे यकीन है कि यहां अब भी ऐसा ही होता है, कुछ उल्लेखनीय अपवादों को छोड़कर हम कहावती पढ़ाकू लोग थे जिनको मर्दाना कही जाने वाली खेल-गतिविधियों से स्कूल द्वारा वंचित रखा जाता था। आईआईटी, में हम सभी एक ही प्रकार के होने के बावजूद हम बड़े खिलाड़ियों द्वारा लगाए गए छक्कों को रोकने के लिए डीप-लेग में फील्डिंग करने के स्थान पर हमें अपने जीवन में पहली बार नेट में बल्लेबाजी और गेंदबाजी करने का अवसर मिला था। हम सभी ने कुछ न कुछ किया, फोटोग्राफी से लेकर पब्लिशिंग तक के कार्य निश्चित रूप से हमें नाट्य-कला से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया था जहां हमें स्त्री-पुरुष दोनों सदस्यों के साथ ढ़ेर सारा समय बिताने का मौका मिलता था। दुर्भाग्य से मैं अभिनय में अच्छा नहीं था, इसलिए मैंने आत्म-बोध के लिए कही स्वयं को और जोड़ लिया। लेकिन, वहां अनेक पर्याप्त स्थान थे जहां आप स्वयं को जोड़ सकते थे।

विद्यार्थियों की राजनीति गर्म रहती थी, बहुत सारी योजनाएं, रणनीतियां होती थीं और पीठ-पीछे धोखा देना भी शामिल होता था। इसमें भी बौद्धिकतापूर्ण तरीके से समय बीतता था, जिसमें न कोई हिंसा होती थी और न ही भ्रष्टाचार जो हमारे देश में विद्यार्थियों को राजनीति के किसी और रास्ते पर ले जाती है। आपको छोटे से छोटे दिमाग़दार वोटर को वोट देने के लिए राजी करवाना पड़ता है, यह तरीका ढूंढना पड़ता है कि उस वोट को कैसे हासिल किया जाए, हमने वहीं से समझाकर सहमत कराने की कला सीखी है।

इस प्रकार से हम कक्षा में, आरसीए के स्क्वैश कोर्ट, सभ्य स्पिक मैक्के रात्रि शास्त्रीय संगीत समारोह तथा ओट के भीड़ भरे रॉक-कान्सर्ट से गुज़रते हुए बड़े हुए हैं। हम में से कुछ लोग शायद, कैलाश हास्टेल के बाहर उम्मीदें लगाए घंटों बिता दिया करते थे और कई बार हमारे इंतजार का फल मिल जाता था, वसंत ऋतु की खूबसूरत रात हम दोस्तों के साथ बिताते थे और दीक्षांत हाल की छत पर बैठकर गप्पें मारते तथा सितारों को देखते रहते थे। संस्थान ने हमारे भीतर भोले पन के स्थान पर एक अधिक आत्मविश्वास वाली परिपक्वता भर दी थी। हम संस्थान में फुरतीले लड़के, लड़कियों की तरह दाखिल हुए थे और वहां से बुद्धिमान पुरुष व स्त्री बनकर निकले थे। मेरा विश्वास है इस संस्थान ने जो हमारे साथ किया था वही आपके साथ किया होगा। आप उसके लिए आने वाले वर्षों में संस्थान को धन्यवाद देंगे।

आज यहां बोलते हुए मुझे मालूम है कि अकसर दीक्षांत समारोह के भाषण शीघ्र ही भुला दिए जाते हैं। यह स्थिति वक्ता को नैतिक कष्ट पहुंचाती है। यदि आज में जो आपसे कहने जा रहा हूँ, उसे याद नहीं रखेंगे तो यह मेरे लिए बेकार की कोशिश होगी कि मैं आपके लिए अच्छे अच्छे शब्द गढ़ूँ। कुल मिलाकर इसका प्रभाव यही पड़ता है जैसाकि अर्थशास्त्री कहते हैं कि यह एक बुरी साम्य-स्थिति होती है। हो सकता है कि मेरा भाषण याद रखने लायक न है और आप उसे जल्दी भुला देंगे। यदि ऐसा है तो बेहतर होगा कि मैं आगे न बोलते हुए अपना भाषण यहीं पर समाप्त कर दूँ और हम सब अन्य ज़रुरी कार्य के लिए रवाना हो जाएं।

जो भी हो, मैं अपने निजी फायदे को ध्यान में रखे बिना अपने मुख्य अतिथि होने का धर्म निभाऊंगा। मैं इस विषय पर बात करुंगा कि भारत की आर्थिक प्रगति के लिए देश में विमर्श करने की परंपरा तथा बातों के बारे में जानने की खुली भावना कितनी महत्वपूर्ण है। मैं इसे विस्तार से अपको बताना चाहूंगा।

---

* डॉ. रघुराम जी. राजन, गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 31 अक्तूबर 2015 को आईआईटी, दिल्ली के दीक्षांत समारोह में दिया गया भाषण।

रॉबर्ट सोलो, अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार विजेता रहे हैं। उनका कार्य यह था कि आर्थिक संवृद्धि का अधिकांश हिस्सा उत्पादन के अधिक से अधिक कारकों जैसे श्रमिक एवं पूंजी के इस्तेमाल से नहीं उत्पन्न होता है। बल्कि, इन उत्पादन के कारकों को बुद्धिमानी पूर्ण तरीके से लगाना पड़ता है जिसे वे कुल उत्पादकता वृद्धि के नाम से पुकारते हैं। अन्य शब्दों में कहें तो -नए आइडियाज, उत्पादन के नए तरीके, बेहतर संभार-तंत्र-से क़ायम रखने योग्य आर्थिक विकास पैदा होता हैं। हां, हमारे जैसे गरीब देश में थोड़ी वृद्धि कुछ ज़्यादा लोगों को काम पर रखकर, उन्हें कृषि के कम उत्पादन की जगह से हटाकर उद्योग या सेवा क्षेत्र में अधिक मूल्य के उत्पादन पर लगाकर और उन्हें कार्य करने के लिए बेहतर औज़ार देकर लाई जा सकती है। आप में से जिन्होंने अर्थशास्त्र लिया होगा वे यह मानेंगे कि हम भारत में उत्पादन संभावना फ्रंटियर से सामान्यतया बहुत पीछे हैं, इसलिए हम औद्योगिक राष्ट्रों में तरीकों को अपनाते हुए लंबे समय तक उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

लेकिन, यदि अधिक बुद्धिमानी से कार्य किया जाए तो हम उत्पादन के पुराने तरीके से छलांग लगाकर बड़ी तेजी से उत्पादन संभावना फ्रंटियर को पा सकते हैं - उदाहरण के तौर पर, हमने साफ्टवेयर उद्योग के पुर्जों में काफी कार्य किया है। निःसंदेह, एक बार आप यदि फ्रंटियर पर आ गए और विश्व के सर्वोत्तम तरीकों का इस्तेमांल कर रहे हैं तो आगे तरक्की करने का एक ही रास्ता है कि नवोन्मेष को अपनाएं, यहां तक कि विश्व के अन्य लोगों से बेहतर तरीके अपनाएं। हमारी साफ्टवेयर फर्में इस समय यही तरीका अपना रही हैं।

हमारे कार्यक्षेत्र को जिससे आप जैसे विद्यार्थी शीघ्र ही जुड़ेंगे, भारत की शक्ति को फ्रंटियर तक तथा उससे और आगे ले जाने के प्रयास में हैं। ई-कॉमर्स में हुई प्रगति को ही देखिए, इलेक्ट्रॉनिक बाज़ार के स्थान से लेकर नये संभार-तंत्र नेटवर्क और भुगतान प्रणाली की दिशा में प्रगति हुई है। आज, एक छोटे से कस्बे में रहने वाला उपभोक्ता भी फैशन के वही कपड़े चुन सकता है जिसका आनंद - बड़े-बड़े महानगरों में कोई व्यक्ति उठाता है, इसकी साधारण सी वजह यह है कि इंटरनेट ने भारत की समस्त दुकानों को उसके दरवाज़े तक ला दिया है। और जहां स्थानीय दुकान में मोटे कपड़े नहीं बिक पा रहे थे, वहीं शीघ्र खराब होने वाली चीजों को भी बेच सकती है जिसकी उसे जल्दी-जल्दी ज़रूरत पड़ती है भले ही उसे उप-कांट्रैक्ट आधार पर ही क्यों न मंगाना पड़े और उसे उस दुकान तक पहुंचाने के लिए अंतिम उपाय के रूप में संभारतंत्र का नेटवर्क वहां पहुंचा देता है। नए आइडियाज तथा उत्पादन तरीकों के माध्यम से आर्थिक विकास हासिल करना हमारे प्रोफेसर एवं पूर्व विद्यार्थियों का इस देश के लिए योगदान है।

इसलिए शैक्षिक संस्थाओं या राष्ट्र को चाहिए कि वह आइडिया की फैक्ट्री को खुला रखे। पहली ज़रूरत यह है कि बाज़ार में आइडिया के लिए स्पर्धा बनाई जाए। इसका आशय यह है कि समस्त प्राधिकार एवं परंपरा के प्रति चुनौती को प्रोत्साहित करना, साथ ही इस बात को भी स्वीकार करना कि किसी भी विचार को केवल अनुभवजन्य जांच के आधार पर ही खारिज किया जाए। इसमें इस बात के लिए कोई जगह नहीं है कि कोई भी शासन में होने के नाते कोई विशेष विचार या मंतव्य किसी पर थोपे। इसके बजाय समस्त आइडियाज (विचार) की ज़बरदस्त संवीक्षा की जाए, भले ही वे विचार देश में या विदेश में जनमे हों, चाहे वे हज़ारो वर्ष पुराने हों या कुछ मिनट पहले दिए गए हों, चाहे वे एक अप्रशिक्षित विद्यार्थी द्वारा दिए गए हों या विश्व प्रसिद्ध प्रोफेसर द्वारा दिए गए हों।

मुझे यक़ीन है कि आपने भौतिकशास्त्र के बारे में रिचर्ड फेयनमैन के व्याख्यान अवश्य पढ़े होंगे, हम जब आईआईटी में थे तब इसे पढ़ना हमारे लिए अनिवार्य था। भौतिकशास्त्र के नोबल पुरस्कार विजेता 21वीं शताब्दी के महान व्यक्ति थे। उन्होंने अपनी जीवनी में यह लिखा है कि उन्होंने प्रिंस्टन में उन्नत अध्ययन संस्थान का माहौल कैसा उपहासपूर्ण पाया था। आप जानते ही हैं कि उन्नत अध्ययन संस्थान मिलकर विश्व के कुछ बेहतरीन स्कालर्स को एकजुट करते हैं ताकि वे समस्याओं पर अनेक विधाओं के परिप्रेक्ष्य में विचार कर सकें। लेकिन उन्होंने यह पाया कि वहां का वातावरण नीरस था, उनसे प्रश्न पूछने वाले विद्यार्थी नहीं थे, ऐसे प्रश्न जो उसे अपने मत पर पुनः विचार करने के लिए और शायद नये सिद्धांत की खोज करने के लिए बाध्य करते प्रश्न करने और वैकल्पिक विचार रखने से आइडिया उत्पन्न होते हैं, कभी-कभी हास्यास्पद प्रश्नों से भी नये आइडिया निकलते हैं। अंततः आइंस्टीन ने सापेक्षता सिद्धांत का निर्माण कुछ इस प्रकार के पागलपन वाले प्रश्न की खोज के आधार पर किया था कि यदि कोई व्यक्ति प्रकाश की गति से ट्रेन में यात्रा करे तो उसे किस प्रकार का अनुभव होगा। इसलिए कुछ भी अलग नहीं रखा जा सकता बल्कि प्रत्येक मसले पर बहस हो तथा उसकी निरंतर परख की जाए। कोई भी इस प्रकार से बोलकर न निकलने पाए जिसकी बातों पर प्रश्न न किए जाएं यहि आइडिया के लिए इस प्रकार की स्पर्धा नहीं होती है तो वह स्थिति ठहराव की स्थिति होती है।

इससे एक दूसरी ज़रूरी बात पैदा होती है : सुरक्षा की, किसी खास आइडिया और परंपरा के बारे में नहीं, बल्कि प्रश्न करने और चुनौती देने के अधिकारी की, अलग प्रकार से आचरण करने के अधिकार की बशर्ते कि वह आचरण दूसरों को गंभीरता से आहत न करे। इस सुरक्षा में सामाजिक रूप से स्व-हित निहित है, इसके

लिए ऐसी नवोन्मेषी तैयारी की चुनौती को प्रोत्साहित करना पड़ेगा जिसे समाज विकसित करता है, और इससे वही आइडिया प्राप्त होती हैं जो सोलो की कुल उत्पादकता कारक संवृद्धि संकल्पना को आगे बढ़ाती है। सौभाग्य से भारत ने हमेशा से विमर्श करने और विभिन्न विचार रखने को संरक्षण प्रदान किया है। कुछेक ने तो इन विचारों को स्थायी ढांचे में ही शामिल कर दिया है। तंजौर में राजा राजा चोला ने आलीशान बृहदीश्वर शैव मंदिर की मूर्तियों में विष्णु तथा ध्यानस्थ बुद्ध की मूर्ति भी शामिल की अर्थात् अलग-अलग विचारों को भी स्वीकारा गया था। जब शहंशाह जलालुदीन मुहम्मद अकबर ने अपनी अदालत में अनादि-सत्य के संबंध में विमर्श करने के लिए सभी संप्रदायों के विद्वानों को आमंत्रित किया था, तब वह हमारी पुरानी परंपरा एवं बुद्धिष्ट राजाओं की परंपराओं का ही पालन किया था और उन्होंने प्रश्न करने की भावना को प्रोत्साहित किया और संरक्षण प्रदान किया था।

ऐसी स्थिति में समूह की भावना के बारे में क्या? क्या ऐसीआइडिया या आचरण जिससे एक खास बुद्धिजीवी की हैसियत या समूह आहत होता हो, उसपर पाबंदी क्यों न लगा दी जाए? शायद लगानी चाहिए, लेकिन तत्काल पाबंदी लगाने से वह बहस ठंडी पड़ सकती है जिसकों लेकर हरेक क्रोधित था और जिस विचार को नापसंद करते थे। लेकिन इससे कहीं बेहतर यह होगा कि सहिष्णुता और परस्पर सम्मान के माध्यम से माहौल को सुधारा जाए।

मैं इसे इस प्रकार स्पष्ट करना चाहूंगा, ऐसे कृत्य जिससे किसी को शारीरिक चोट पहुंचती है, या ऐसी बातें जिससे खास समूह की भावना के प्रति अवहेलना होती है और उससे वैचारिक बाजार में समूह की सहभागिता को क्षति पहुंचती है, निश्चित रूप से इसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। मिसाल के तौर पर, यौनउत्पीड़न, चाहे वह शारीरिक हो या मौखिक हो, इसका समाज में कोई स्थान नहीं है। वहीं पर समूह को किसी एक या किसी भी स्थान पर कमज़ोर नहीं मानना चाहीए ताकि बहुत अधिक आपत्तिजनक लगने लगे। मनोविज्ञान का पूर्वाग्रह पुष्टि सिद्धांत यह कहता है कि जब कोई किसी का अपमान करना चाहता है तब वह हर जगह कर सकता है, यहां तक कि अत्यधिक अहानिकारक वक्तव्यों से भी कर सकता है। वस्तुतः आप जो कृत्य करते हैं यदि वह मुझे बुरा लगता है किंतु उससे मुझे अन्यथा नुकसान नहीं पहुंचता है, तब भी आपके ऐसे कृत्य को रोकने के लिए बहुत बड़ी दीवार होनी चाहीए। आखिरकार, किसी भी प्रकार की पाबंदी, और उसे लागू करने के लिए सावधानीपूर्वक की गई कार्रवाई से आपको बहुत अधिक या उससे भी ज़्यादा बुरा लगेगा जितना कि मुझे तिरस्कार महसूस हुआ था। राजनैतिक औचित्य का आधिक्य प्रगति का गला घोंट देता है, ठीक उसी तरह जिस तरह से अत्यधिक लाइसेंस देने या अनादर से होता है।

दूसरे शब्दों में, बटन दबाते समय आप यथासंभव उतनी बार बटन नहीं दबाएंगे जो मुझे तंग करने जैसे लगने लगे, जब आप बटन दबाते हैं तब आप यह अच्छी तरह बताने की स्थिति में हों कि बटन दबाना ज़रूरी क्यों है ताकि बहस आगे जारी रखी जा सके, और उसकी व्याख्या किस तरह ऐसी हो जो जो मुझपर व्यक्तिगत आक्षेप न लगे। आपको आदर से पेश आना चाहिए, यह आश्वस्त करते हुए कि मेरे जो विचार हैं उसके प्रति चुनौती प्रगति के लिए आवश्यक है। वही पर मेरे पास कुछ ऐसी आइडिया होनी चाहिए जो मेरे व्यक्तित्व के साथ नजदीक से जुड़ी हों ताकि उनपर लगाया गया कोई भी आक्षेप व्यक्तिगत अपमान लगे और सहन करने योग्य न हो। सहिष्णुता का अर्थ यह नहीं है कि किसी की आइडिया के प्रति इतना असुरक्षित महसूस करना कि कोई उसे चुनौती ही न दे सके - इसका आशय यह है कि निर्लिप्त रखने की मात्रा उतनी हो जो एक परिपक्व बहस के लिए अत्यंत आवश्यक हो। अंतिम बात यह है कि सम्मान के लिए अपेक्षित है कि विरले मामले में भी यदि कोई आइडिया किसी समूह के खास व्यक्तित्व से निकट से जुड़ी हुई हो तो उसे चुनौती देते समय हमें ज़रूरत से ज़्यादा सावधानी बरतनी चाहिए।

सहिष्णुता, बहस के दरम्यान से अपमान को बाहर खींच ले जाती है, बल्कि सच तो यह है कि उससे स्थिति आदरपूर्ण हो जाती है। यदि मैं हर बार बटन दबाने से उत्तेजित हो जाता हूँ तो मेरी यह हरकत विरोधी लोगों को बटन दबाने के लिए प्रेरित करती है, जबकि शरारती लोग तो ऐसा करना ही चाहेंगे। यदि मैं मौके की नज़ाकत को भांपते हुए प्रतिक्रिया नहीं देता हूँ, बल्कि बटन दबाने वालों से यह पूछता हूं कि वे अपनी चिंताओं को बयान करें, तब विरोधी लोगों की बहस करने में कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। और तब विरोधी लोग खिलवाड़ के तौर पर बटन नहीं दबाएंगे। जबकि ठगी प्रकृति के शरारती जो प्रत्येक समूह में पाए जाते हैं, के पास आसान रास्ता नहीं बचता है। ऐसी स्थिति में सहिष्णुता और सम्मान एक अच्छा साम्य पैदा करता है जो एक-दूसरे को संबल प्रदान करता है।

उदाहरण के लिए, अमरीका में बाग़ी युवक अमरीकी झंडे को जला देते थे। इससे पुरानी पीढ़ी को तकलीफ पहुंचती थी जिन्होंने अमरीका के युद्ध में लड़ाई लड़ी थी और वह झंडा उनके लिए इस बात का प्रतीक था कि उसके लिए ही उन्होंने लड़ाई की थी। और इस पर पुलिस, जिनमें से अनेक सेवानिवृत्त सैनिक भी थे, हिंसा पर उतर आते थे, और यही तो बाग़ी युवक चाहते थे कि वे प्रतिक्रिया दिखाएं जिससे उनका मकसद आगे बढ़ सके। हालांकि, समय बीतने

के साथ-साथ अमरीकी समाज झंडा जलाने के प्रति अत्यधिक सहिष्णु हो चुका है। क्योंकि अब इस कृत्य से प्रतिक्रिया नहीं होती है और न ही इसे अब आघात पहुंचाने के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। संक्षेप में, यदि समूह की भावनाएं ज्यादा सहिष्णु हो जाती हैं और आसानी से आहत नहीं होती हैं तब ऐसे कृत्य जो आघात पहुंचाना चाहते हैं उनका प्रभाव कम हो जाएगा। जैसाकि महात्मा गांधी ने कहा था ''आचरण का सर्वोत्तम नियम परस्पर सहिष्णुता है, यह जानते हुए कि हम सभी एक जैसा नहीं सोचते हैं और हमें विभिन्न दृष्टिकोण से सदैव छोटे-छोटे भागों के सत्य को ही देखना चाहिए।''

अब मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूँ। आप जैसे आईआईटी के लोग भारत में वैचारिक गति को आगे बढ़ाएंगे। आप भारत को प्रौद्योगिकी का कौशल इस्तेमाल करते हुए जिस प्रकार का क्रमिक-विकास प्रदान करेंगे वह हमारे द्वारा दिए गए विकास क्रम से काहीं अधिक होगा। मैं आपके लिए बेशुमार महत्वाकांक्षाओं की कामना करता हूँ और उन सभी के लिए बड़ी सफलता चाहता हूँ जो निरंतर चिंतन से जुड़े रहेंगे एवं चुनौतियों का सामना करते रहेंगे। लेकिन जब आप यहां से बाहरी दुनिया में कदम रखें तो आदर और सहिष्णुता के वातावरण में विचार-विमर्श की परंपरा को बनाए रखना याद रखें। इसे क़ायम रखकर और इसे क़ायम रखने के लिए संघर्ष करके आप इस महान संस्था के अपने शिक्षकों के प्रति तथा अपने माता-पिता के प्रति जिन्होंने आपको यहां अध्ययन हेतु भेजने के लिए कठिन परिश्रम किया है, के प्रति अपना हक अदा करेंगे। और इस प्रकार आप हमारे देश के लिए महान देशभक्ति की सेवा प्रदान करते रहेंगे। धन्यवाद और शुभकामनाएं।